समास

-दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर

* समास का शाब्दिक अर्थ है- संक्षेप। हम प्रायः अपने वक्तव्य को कम ही शब्दों में बतला देना चाहते हैं, इसलिए कई पदों को आपस में जोड़कर एक पद बना लेते हैं। इस क्रम में उनका अर्थ सुरक्षित रहता है। ऐसा करने से समय एवं श्रम की तो बचत होती ही है, भाषा में भी कसावट और सुंदरता आती है। जैसे- 'हवन के लिए सामग्री दो' की अपेक्षा 'हवनसामग्री दो' कहने में समय एवं श्रम की तो बचत हो ही रही है, साथ-ही वाक्य अधिक सुगठित लग रहा है। इस तरह हम देखते हैं कि अधिक पदों में कही जानेवाली बातों को एक पद में कहने के लिए समय एवं श्रम की बचत के लिए तथा भाषा को

सुगठित बनाने के लिए समास की आवश्कता होती है।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में समास को इस रूप में परिभाषित किया जा सकता है— एक से अधिक पदों का एक साथ मिलकर संक्षिप्त रूप धारण करना ही समास कहलाता है। दूसरे शब्दों में जब एक से अधिक पद एक साथ मिलकर संक्षिप्त रूप में प्रयुक्त होते हैं, तो इस प्रक्रिया को समास कहते हैं। ऐसे बने हुए पद समस्त पद या सामासिक पद कहलाते हैं तथा समस्त पदों को अपने मूल रूप में अलग करने की प्रक्रिया को विग्रह कहते हैं। जैसे—

विग्रह	—	समस्त पद
• गंगा का जल	—	गंगाजल
• कर्म में वीर	—	कर्मवीर
• बुद्धि से हीन	—	बुद्धिहीन
• विद्या का आलय	—	विद्यालय

समास की प्रक्रिया में जो दो पद आपस में मिलते हैं, उनमें पहले को पूर्वपद एवं दूसरे को उत्तरपद भी कहते हैं। पदों के ये मेल मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं —

1. पूर्वपदप्रधान
2. उत्तरपदप्रधान
3. अन्यपदप्रधान
4. उभयपदप्रधान

इस आधार पर समास के मुख्य चार भेद माने गये हैं —

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. बहुव्रीहि समास
4. द्वन्द्व समास

— क्रमशः